सत्संग परमसंत पुष्करदयाल जी महाराज
7 जून 2015 (फरीदाबाद)

आप जो ये टयूब लाईट देख रहे हो ये एक काँच का टुकडा है। इसमे कनेक्शन दे दो पावर हाऊस से तो ये काँच का टुकडा नही रह जाता, ये प्रकाश का बल्ब बन जाता है और सारे कमरे को प्रकाश देता है। ये काँच का टुकडा आप सब हो और जब आप को ऊपर से कनेक्शन मिल जाता है तो तुम भी प्रकाश के बल्ब की तरह चमकने लगते हो, प्रकाश देने लगते हो।

हम इस संसार में आये हैं हमको मालिक से मिलना है। उसके लिए हमें एक बहुत बडी कुर्बानी देनी पडेगी। किस चीज की कुर्बानी? इस संसार की कुर्बानी। इस संसार में तो हम आ ही गए और फँस गए अब इस संसार से छूटने का उपाय सोचो क्योंकि यें संसार रहनें की जगह नही है, इस संसार में दुख ही दुख है, हर कदम पर दुख ही दुख है।

मालिक ने जब ये सृष्टि बनाई और मनुष्य को उतारने से पहले उसने पानी बनाया, फिर हवा बनाई, वनस्पति बनाई, खाने के लिए फल, सब्जी, अनाज बनाया और फिर मनुष्य को उतारा। लेकिन उसने सोचा सब कुछ अच्छा ही अच्छा हो गया और मनुष्य को जब सब अच्छा ही अच्छा लगने लगेगा फिर वो क्यों वापिस मेरे पास आयेगा और फिर क्यों वो मुझे याद करेगा। उसके पास सब कुछ है फल हैं, सब्जी हैं, गेंहू हैं, चावल हैं, पानी है, हवा है तो फिर किसको क्या जरूरत है वापिस अपने घर जाने की, उसको क्या जरूरत है भगवान को याद करने की, तब भगवान को अक्ल आ गई, अरे ये तो मामला गडबड हो गया। ऐसे तो ये सारे मेरे ऊपर हावी हो जाएँगे और मुझे ही आँख दिखाने लगेगें, तो उसने क्या किया? उसने इस संसार में दुख डाल दिया ताकि मनुष्य कभी ये ना समझे मैं ही हूँ और उसको अहंकार आ जाए और और जब उसको दुख आएगा वो मुझे याद करेगा। इस संसार में हर प्रकार के दुख हैं जितने मनुष्य हैं इस संसार में उतने ही प्रकार के दुख हैं इस संसार में हरेक को अपना–2 दुख है। आप दस आदमियों की कहानी सुनो, दस आदकमयों की कहानी अलग–2 होगी।

कल हमारे BPTP में क्या हुआ? एक 80 साल का बूढा आदमी था उसके पास काफी पैसा था, पैंशन भी थी 30–40 हजार रू0 लेकिन घर में उसके साथ कोई सीधी बात नही करता था। उसकी बीबी भी उसके साथ झगडा करती थी, उसका एक ही बेटा था वो भी उसके साथ झगडा करता था और उसकी बहू भी उसके साथ सीधे मुँह बात नही करती थी। अब तीन तो गलत हो नही सकते, गलत तो एक ही होगा ना। अब उसने क्या किया? शुबह 5 बजे उठा, बैग उठाया उसके बैग में 1 लाख 20 हजार रू0 थे। मोबाईल घर पर ही छोड दिया और निकल गया घर से, कहाँ गया पता ही नही। FIR किया सब रिश्तेदारों को फोन किया, सबने कहा यहाँ नही आया। अब देखो 80 साल की उम्र में भी वो सुखी नही है। मेरे कहने का मतलब यह है कि यहाँ जितने भी प्राणी हैं इस संसार में उतने ही प्रकार के दुख हैं। ये संसार रहने की जगह नही है। अगर हमारे पास कोई ऑपशन नही होता तो हम कहते ठीक है अब तो यहीं रहना है और दुख–सुख सहना है। लेकिन हमारे पास ऑपशन है, हमारे पास एक ऐसी जगह है जहाँ सुख ही सुख है, आनन्द ही आनन्द है और प्रेम ही प्रेम है, परम आनन्द है, परम सुख है। आप सब उस जगह जा सकते हो लेकिन एक शर्त है, बहुत कडवी शर्त है। आपको इस संसार में रहकर संसार को छोडना है कमल के फूल की तरह।

कबीर साहब कहते हैं–

कबीरा खडा चौराहे पर, लिये हाथ में मशाल।
जो कोई फूँके घर अपना, चलिये हमारे संग।।

कबीर साहब कहते हैं मैं चौराहे पे खडा हूँ और मेरे हाथ में मसाल है। मेरे साथ जो भी चलना चाहेगा उसको सबसे पहले इस मसाल से अपना घर फूँकना पडेगा तब मेरे साथ चल सकता है। अब बताईये कौन तैयार होगा जो अपने घर को फूँके और और उनके साथ चले, लेकिन कबीर साहब का ये मतलब नही था कि तुम अपने घर को फूँको। कबीर साहब का मतलब था तुम अपने अहंकार को फूँको और चलो मेरे साथ, और मैं कहता हूँ इस संसार को छोडो और चलो मेरे साथ। संसार को छोडने का मतलब क्या है? संसार को छोडने का मतलब है– देखो पहला है ब्रह्मचर्य आश्रम, दूसरा है गृहस्थ आश्रम, तीसरा है सन्यास आश्रम और चौथा है वानप्रस्थ आश्रम, इन चार आश्रमों में सबसे उत्तम आश्रम है गृहस्थ आश्रम, गृहस्थ आश्रम में रहकर आपको गृहस्थ में नही रहना है इसी को बोलते हैं वैराग्य। मैं यह नही कह रहा हूँ कि आप मेरे साथ हरिद्वार चलो, जंगलो में चलते हैं, मैं यह नही कह रहा हूँ, मैं कह रहा हूँ अपने घर में रहो, अपने गृहस्थ में रहो लेकिन गृहस्थ के साथ चिपको मत।

परसों कपिला जी का Mail आया, कहने लगे मन उदास है। मैंने कहा भाई साहब इस संसार में सब अपना–अपना भाग्य लेकर आये हैं आप अपना भाग्य किसी को नही दे सकते हो और आपका बेटा अपना भाग्य आपको नही दे सकता है। सब अपना–अपना भाग्य लेकर आये हैं और जो ये हमारे रिश्ते हैं, बेटा–बेटी, बहू, पति–पत्नी, माँ–बाप, ये सब हमारे कर्मों के रिश्ते हैं कोई किसी का नही है अपने कर्मों का हिसाब खत्म हुआ, चल पडे।

मेरी बहू थी वो अपने पति से बहुत प्यार करती थी लेकिन अन्त समय में वो जब अपने पति की गोदी में थी और उसने कहा कि मैं अब सोना चाहती हूँ और आँखें बन्द की और खत्म। यहीं हैं संसार के रिश्ते। समझो! ये वहीं तक हैं जहाँ तक इनके साथ कर्मो का लेन–देन है, लेन–देन खत्म हो गया और चले गए, और आप इसी में फँसे रहते हों। आपको मजा आता है फँसने में और मैं कहता हूँ इस मजे को छोड दो, ये मजा नही है, ये विष है, ये जहरीला नाग है कभी भी ढंस लेगा। हमारे आचार्य थे निरंजन लाल जी, उनका एक पोता था बहुत सुन्दर और पढने में बहुत तेज था। वो 12 साल का हो गया था। उसका जन्म दिन था उसने अपने पिता जी से कहा मुझे हीरो–होण्डा बाईक दिलवा दो। परिवार का इकलौता था पिता जी ने बाईक दिलवा दी। वो हीरो–होण्डा बाईक उसकी आखिरी लेन–देन थी। वो उस बाईक को लेकर अपने नाना–नानी जी के पास गाजियाबाद गया। रास्ते में कोई ट्रैफिक नही था एक पुराना बिजली का खम्बा था और सीधा उस खम्बे से टकराया, मोटर साईकिल इघर पडी और वो उधर पडा, मोटर साईकिल को खरोंच तक नही आयी लेकिन लड़का खत्म हो गया। तो क्या हैं ये रिश्ते–नाते? अब इसमें एक और कडी है उसके जो माँ–बाप हैं उनको सारी उम्र रोने के लिए छोड गया। क्यों छोड गया? पता नही किस जन्म में उस माँ–बाप ने उसके साथ कोई बुरा सुलूक किया था। ये संसार ऐसे ही नही चलता है, ये संसार चलता है प्रकृति के कानून से ''जैसा करोगे वैसा भरोगे'' और एक तीर से दो शिकार करता है। उस माँ–बाप ने उस बच्चे के साथ ना जाने क्या गलत किया था और उस बच्चे का उनके साथ सिर्फ 12 साल का लेन–देन था और लेन–देन में आखिरी हीरो–होण्डा का लेन–देन रह गया था, हीरो–होण्डा आ गई, उसका लेन–देन पूरा हो गया और वो चला गया। अब इसका मतलब यह नही कि अपने बच्चों को घर से बाहर फेंक दो कि हमारा कोई रिश्ता नही है ये तो लेन–देंन के रिश्ते हैं, हम क्यों निभाए? अगर कोई बच्चा आ गया है आपके घर में और आपका उसके साथ कोई लेन–देन का रिश्ता है तो आपको वो लेन–देन का रिश्ता निभाना ही पडेगा, आप उसे सडक पर नही छोड सकते, अगर आप ने उसे सडक पर छोड दिया तो इसका मतलब आपने अपने कर्मो को और बढा दिया और इसका क्या परिणाम होगा? आप इस संसार के चक्र में और फँस जाओगे। इसलिए आपके जो रिश्ते नाते हैं उनके साथ आपको लेन देन निभाना ही पडेगा। सारे रिश्ते निभाओ लेकिन मुरगावी की तरह, कमल के फूल की तरह। मुरगावी सारा दिन पानी में रहती है, जब वो

किनारे पर आती है एक बूँद पानी उस पर नही होता है, एक दम सूखी होती है, पानी उसका कुछ नही बिगाडता है। इसी तरह तुम भी मुरगावी बनो, इस संसार की गंदगी में तैरते रहो। संसार एक गंदगी है–बीमारी, रोग, गरीबी, बेरोजगारी, भूख। अस्पताल भरे पडे हैं, जेल भरे पडे हैं। मर्डर, किडनैपिंग, रेप, यही है संसार और इस संसार में आप तैरते रहो लेकिन मुरगावी की तरह, ये संसार आपको छूना नही चाहिए। यही है मेरी शर्त, मैं आपको अपने साथ ले जाने को तैयार हूँ चलो मेरे साथ, लेकिन कैसे? मुरगावी बन के। मैं आपसे ऐसा क्यों कह रहा हूँ? क्योंकि आपका ध्यान हमेशा मेरी तरह रहे, आपके परिवार की तरह नही रहे, आपके रिश्तेदारों की तरह नही रहे। रिश्तेदारी निभाओ, उनके भाग्य में जो है उनको दे दो, लेकिन अपना ध्यान मेरी तरह रखो जब आपका ध्यान मेरी तरह रहेगा तब आपका ध्यान संसार की ओर से हट जाएगा और आप मुरगावी बन जाओगे। यही कारण है कि मैं कहता हूँ मुरगावी बनो और जब आप मुरगावी बन जाओगे तो आओ–आओ मेरे बच्चों में आपका इंतजार कर रहा था, चलो मेरे साथ मैं शब्द की नाव लाया हूँ, शब्द की नाव में बैठो और मैं आपको इस शब्द की नाव में बैठाकर भवसागर से पार कराऊँगा।

!! राधा–स्वामी !!